Gold Bullion Standard

प्रथम विश्व-युद्ध के बाद 1925 में इंगलैंड तथा देशों में अंतर्राष्ट्रीय स्वर्ण मान की एक नयी प्रणाली को स्वर्ण-धातु मान के रूप में अपनाया गया था। युद्धकाल में यूरोपीय देश में मुद्रा-प्रसार की आवश्यकता पड़ी, इन देशों के पास कार्य के लिए पर्याप्त मात्रा में स्वर्ण-कोष नहीं था। युद्ध प्रारम्भ होते ही स्वर्ण-धातुमान को स्थगित कर दिया गया।

युद्ध के बाद स्वर्ण-मान को अपनाने की अपनाने की बात हुई, इंगलैंड एवं यूरोपीय देशों में युद्ध-काल में प्रसारित अत्यधिक मुद्रा का आड़ प्रधान करने के लिए पर्याप्त मात्रा में स्वर्ण कोष नहीं था।

इन देशों में स्वर्ण-पतन मान के एक परिवर्तित रूप-स्वर्ण धातु मान को ही अपनाना गया। स्वर्ण-पतन मान एवं स्वर्ण-धातु मान के संचालन में आधारभूत सिद्धांतों में समानता होते हुए भी इन दोनों में बहुत कुछ बातों को लेकर विभिन्नता थी।

स्वर्ण-धातु मान की विशेषताओं का वर्णन दो जाती है। →

स्वर्ण-धातु का मान निम्नलिखित है।

(क) स्वर्ण-धातु मान में स्वर्ण ही मूल्य-मापन का कार्य करता है, स्वर्ण के सिक्के प्रचलन में नहीं रहते।

देश की प्रमाणिक मुद्रा स्वर्ण की बनी नहीं होकर कागज अथवा किसी निम्न धातु की बनी हुई थी।

Scanned with CamScanner

जो एक निश्चित दर पर स्वर्ण पिण्डो मे परिवर्तित रहती है।
साथ ही इस प्रणाली मे पत्र-मुद्रा के पीछे 100 प्रतिशत स्वर्ण-कोष नही रखकर एक निश्चित अनुपात जैसे 30 या 40 प्रतिशत स्वर्ण ही सुरक्षित कोष मे रखा जाता है।

(ख) सीमित परिवर्तनीयता : →

स्वर्ण धातु मान मे सरकार तथा मौद्रिक अधिकारी सभी प्रकार की मुद्राओ को स्वर्ण मे परिवर्तित करने का आश्वासन देते थे, मुद्रा का स्वर्ण मे परिवर्तन एक निश्चित वजन से कम नही किया जाता था।
इंग्लैंड मे स्वर्ण-धातु मान के अंतर्गत बैंक ऑफ इंग्लैंड 400 औंस से कम के सोने के पिण्डो को नही बेचता था।
स्वर्ण एवं मुद्रा मे केवल सीमित परिवर्तनीयता ही पायी जाती थी।

(ग) मुक्त ढलाई की व्यवस्था नही : →

स्वर्ण-धातु मान मे स्वर्ण चलन मान की तरह मुक्त ढलाई की सुविधा नही रहती थी।
इस प्रणाली मे भी स्वर्ण के आयात एवं निर्यात पर किसी प्रकार का प्रतिबंध नही रहता था।

स्वर्ण-धातु मान के निम्नलिखित है।

(ख) स्वर्ण के उपयोग मे मितव्ययिता : →
स्वर्ण-धातु मान मे सोने की बनी हुई मुद्रा प्रचलन मे नही होने के कारण बहुमूल्य धातुओं की बचत होती थी तथा घिसावट आदि द्वारा भी बहुत-सा सोना समाप्त नही होने पाता।
देश की मौद्रिक व्यवस्था स्थायी रहती थी।

(घ) इस प्रणाली मे पर्याप्त मात्रा मे लोच पायी जाती है : →
इसमें पत्र-मुद्रा के पीछे 100 प्रतिशत स्वर्ण रखना कोई आवश्यक नही था।
स्वर्ण-कोष की मात्रा मुद्रा की मात्रा के केवल 30 से 40 प्रतिशत भाग ही होती थी।
इस स्वर्ण-धातु-मान मे देश की औद्योगिक तथा व्यापारिक आवश्यकताओं तथा व्यापारियों के अनुसार मुद्रा का मात्रा मे भी परिवर्तन करने की सुविधा यानी बहुत अधिक लोच थी।

(ग) स्वर्ण का प्रयोग मुख्यत: अंतर्राष्ट्रीय भुगतान के लिए ही किया जाता है : →
अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मे वृद्धि होती है तथा विदेशी विनिमय-दर मे स्थायित्व भी कायम रहता है।
स्वर्ण-धातु मान के अंतर्गत भी स्वर्ण-मान के प्राय: सभी लाभ पाया जाता है।
इसलिए प्रो० बेन्हम ने इसे स्वर्ण के सिक्के के प्रचलन के बगैर स्वर्ण-मान की संज्ञा दी है।

(ख) स्वर्ण के उपयोग मे मितव्ययिता : ⟶ स्वर्ण - धातु मान मे सोने की बनी हुई मुद्रा प्रचलन मे नही होने के कारण बहुमुल्य धातुओं की बचत होती थी तथा घिसावट आदि द्वारा भी बहुत - सा सोना समाप्त नही होने पाता।
देश की मौद्रिक व्यवस्था स्थायी रहती थी।
(ग) इस प्रणाली मे पर्याप्त मात्रा मे लोच पायी जाती है : ⟶ इसमें पत्र - मुद्रा के पीछे 100 प्रतिशत स्वर्ण रखना कोई आवश्यक नही था।
स्वर्ण - कोष की मात्रा मुद्रा की मात्रा के केवल 30 से 40 प्रतिशत भाग ही होती थी।
स्वर्ण - धातु मान मे देश की औद्योगिक तथा व्यापारिक आवश्यकताओं तथा व्यापारियों के अनुसार मुद्रा का मात्रा मे भी परिवर्तन करने की सुविधा यानी बहुत अधिक लोच थी।
(घ) स्वर्ण का प्रयोग मुख्यतः अंतर्राष्ट्रीय भुगतान के लिए ही किया जाता है : ⟶ अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मे वृद्धि होती है तथा विदेशी विनिमय - दर मे स्थायित्व भी कायम रहता है।
स्वर्ण - धातु मान के अंतर्गत भी स्वर्ण - मान के प्रायः सभी लाभ पाया जाता है।
इसलिए प्रो॰ बेन्हम ने इसे स्वर्ण के सिक्के के प्रचलन के बगैर स्वर्ण - मान की संज्ञा दी है।

स्वर्ण - धातु मान के दोष निम्नांकित हैं →
प्रथम विश्व - युद्ध के बाद युद्धकालीन मुद्रा के प्रसार को बनाये रखने के लिए स्वर्ण - धातु मान को आदर्श मान समझा गया था।
निम्नलिखित प्रमुख दोषों के कारण यह मान अधिक दिनों तक चल न सका : →

(i) स्वर्ण - धातु मान में स्वर्ण - चलन मान की अपेक्षा जनता का विश्वास कम रहता है : →
इस मान में देश की प्रामाणिक मुद्रा सोने की बनी न होकर कागज की होती है। इसमें कोई संदेह नहीं कि कागज के नोटों को स्वर्ण में परिवर्तित किया जा सकता है, इस परिवर्तनशीलता के गुण के बावजूद इस मुद्रा प्रणाली में जनता का विश्वास दृढ़ नहीं होने पाता।

(ii) स्वर्ण - चलन मान की तरह स्वर्ण - धातु मान को अनुकूल परिस्थितियों का ही मान है → आर्थिक संकट के समय इसे भी बनाये रखने में कठिनाई होती है।

(iii) स्वर्ण - धातु मान में सरकारी निर्णय एवं हस्तक्षेप की अधिक आवश्यकता पड़ती है : →
इसका करण यह है कि स्वर्ण चलन मान वाली स्वयं संचालकता की मात्रा कम पायी जाती है। इसे बनाये रखने के लिए बहुत अधिक मात्रा में सरकारी नियन्त्रण आवश्यकता होती है।
1925 में इंगलैंड ने स्वर्ण - धातु मान को

दी अपनाया था, यह बहुत अधिक दिनों तक नहीं चल सका, स्वर्ण एवं पौंड की दर 1914 के पूर्व की दर के आधार पर ही निश्चित की गयी थी, इस अवधि में मूल्य तल में बहुत अधिक वृद्धि हो गयी थी।
उक्त दर के फलस्वरूप पौंड का एक प्रकार से अधिमूल्यन हो गया था।
इंगलैंड की वस्तुओं का मूल्य विश्व के बाजार में अन्य देशों की अपेक्षा अधिक हो गया।
स्वर्ण-मान का परित्याग करना पड़ा।

Scanned with CamScanner